वृत्तपत्राचे नांव :– दिव्य हिमाचल
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– पंचकुल
वृत्तपत्र पान क :– 5
दिनांक :–24/07/2004

ज्ञानी जगाते हैं वेदों की अलख

वेद क्या हैं? वेद आत्मा का स्वर हैं। वेदों की पूरी शिक्षा आत्मा के स्वर में हो जाती है। आत्मा का पहला स्वर 'अ' है। इस 'अ' में आत्म का, आत्म चेतना का, पूर्ण ज्ञान व प्रवाह है। आत्मा का गठन और विस्तार पूर्ण ज्ञान का विस्तार है। इसलिए कहते हैं कि आत्मा पूर्ण ज्ञान स्वरूप है। इसमें पूर्ण ज्ञान की जो शक्ति है, वह पूर्ण क्रिया, शक्ति का आधार है। जितना बड़ा ज्ञान उतनी बड़ी क्रिया शक्ति। यह वैदिक शिक्षा का सार है। 'अ' से आत्मा 'इ' से आत्मा 'इ' से ईश्वर का ज्ञान करने की वैदिक शिक्षा का सार है। 'अ' में पूरा आत्मा लहराता है। आत्मा के पूरे लहर में पूरा वेद लहराता है। शरीर में वेद का लहरा कब लहराता है, जब चेतना भौतिक शरीर बन गया और उस चेतना में वेद का लहरा होने से शरीर भी वेद का लहरा,वेद का शरीर में वेद लहराने वेद स्वरूप हो गया, पूरे है? वेद अहम होता है। लगा। जब क्या होता चेतना में जगाना इस ज्ञान को अपनी स्वभाव है। पूर्ण ज्ञानी भारतीयों का प्राकृतिक जागृत देखता है। पूर्ण व्यक्ति सर्वत्र वेद को सर्वसमर्थता को देखता ज्ञान की जागृति में का उद्गार है 'का बताऊं है। इसलिए यह भारत राम तो मैं राम'। वह तो कहां-कहां राम, मो में निराकार की ब्रह्म सत्ता सर्वत्र है। उस निर्गुण- अभिव्यक्ति है। सब जगह सगुण-साकार

इसको पेड़ के उदाहरण से समझते हैं। पूरे पेड़ में जो रस होता है, वह तो एक ही होता है। पूरे पेड़ का रस उसी बीज में होता है, जिससे पूरा पेड़ बनता है। बीज में से जो पौधा निकलता है, उनके हजारों फल-फूल, पत्ती, शाखा निकलती हैं, वह इस रस की अभिव्यक्ति है। रस तो एक है, लेकिन उसमें विविधता है। यह एकत्व की सत्ता है, लेकिन उसमें नानात्व होता है। यह ब्रह्म की सत्ता है, सब कुछ ब्रह्म है, बाकी जो कुछ है, वह भ्रम है। अव्यक्त में व्यक्त दिखने लगता है, तो ऐसा होता है। आत्मा तो अव्यक्त है, वह व्यक्त से ढकी नहीं है, वह तो अपने आप में पूरी जागृत है,यह तो अपनी दृष्टि का दोष है। 'यथा दृष्टि तथा सृष्टि' जैसी दृष्टि होगी, वैसी ही सृष्टि दिखाई देने लगती है, वैसी ही हो जाती है। जब हम भौतिकता को ब्रह्म की दृष्टि से देखते हैं तो कोई भ्रम नहीं रहता, जब हम भेद करके देखते हैं तो अलग-अलग दिखाई देता है। इसलिए एकत्वकर्ता, क्रिया, कर्म को प्रकट करता है। यह देवत्व को प्रकट करता है। इसी में नानात्व हो जाता है। उसमें सतोगुण, तमोगुण, रजोगुण हो जाता है,वास्तव में होता नहीं है, वह तो दृष्टि से होने लगता है। यह पूर्ण ज्ञान की ब्रह्म सत्ता सर्वत्र है। पूर्ण ज्ञान की यह सत्ता अनुपूर्वी क्रम से चली आ रही है। ज्ञान सत्ता त्रेता, द्वापर, कलियुग हर काल में हमेशा चलती रहती है। यह वैदिक सत्ता,वैदिक ज्ञान नित्य है, अपौरुषेय है, यह सर्वज्ञता और सर्वसमर्थता का क्षेत्र है। वेद, विज्ञान, विद्या में पूर्ण ज्ञान लहराता है। वैदिक शिक्षा में ब्राह्मी चेतना जग जाती है। जब बहुत से लोगों की चेतना ब्राह्मी हो जाती है, तो सारे विश्व, सारे राष्ट्रों की चेतना ब्राह्मी हो जाती है। उसके सारे नियम, सभी कार्य ब्राह्मी चेतना से संचालित होने लगते हैं। अभी सारे विश्व में मनुष्यकृत संविधान चल रहे हैं। सारी व्यवस्थाएं मनुष्य की बुद्धि से निर्मित नियमों से चल रही हैं। जब पूरे विश्व की चेतना ब्रह्म में जागती है, तो पूरा संचालन ब्राह्मी चेतना में होने लगता है।

–महार्षि महेश योगी